B-2
L-21
Modern
India

15/01/2024

गांधी की विचारधारा

महत्वपूर्ण बिन्दु

- गांधीजी साधन व साध्य की पवित्रता पर विश्वास करते थे उनका स्पष्ट मानना था कि यदि साधन अनुचित हुआ तो साध्य की पवित्रता भी नष्ट हो जाएगी।
- उल्लेखनीय है कि कार्ल मार्क्स ने साध्य की पवित्रता को ही महत्वपूर्ण माना था इसीलिए उनके दर्शन में हिंसा स्वीकार्य है जबकि गांधी के दर्शन में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।
- गांधी का राजनैतिक दर्शन सत्याग्रह पर आधारित है अर्थात् अहिंसा के माध्यम से सत्य की स्थापना करना। गांधी का स्पष्ट मानना था कि शोषण व गलत कार्यों का विरोध होना ही चाहिए और सत्य को स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए लेकिन वे न्यूटन के क्रिया-प्रतिक्रिया नियम के

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Platform
KHAN SIR

अनुसार नहीं होना चाहिए बल्कि सहिष्णुता, वर्ग सामंजस्य के अनुसार होना चाहिए।

- सत्याग्रह के द्वारा गाँधीजी हृदय परिवर्तन का विचार देते हैं जिसके अनुसार गलत रास्ते पर जाने वाले व्यक्ति को एक सत्याग्रही अपने त्याग व आचरण के आधार पर उसे सही रास्ते पर ला सकता है क्योंकि मनुष्य मूलतः अच्छा होता है।
- हृदय परिवर्तन कराने में सत्याग्रही को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं और फिर भी अपने आचरण से वह दूसरों को कष्ट नहीं देता। इसी संदर्भ में गाँधी ने सत्याग्रह को साहसियों का अस्त्र मानते हुए कहा कि, "यदि मुझे कायरता व हिंसा में किसी एक का चयन करना पड़े तो मैं हिंसा को चुनूंगा।"
- गाँधीजी सर्वोदय का विचार देते हैं जिसका आशय है सभी वर्गों का सभी पक्षों से उदय। इस दर्शन से गाँधी अधिक सम्पूर्णतावादी हो जाते हैं क्योंकि एक तरफ जहां पूँजीवाद योग्यता

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

व पूंजी के बल पर पूंजीवादी वर्ग का समर्थन करता है तो वही कार्लमार्क्स सर्वहारा के हितों की बात करता है जबकि गांधीजी सर्वोदय के द्वारा न सिर्फ सभी वर्गों बल्कि उनके सभी आयामों से सभी की उन्नति का विचार देते हैं।

- गांधीजी ने स्पष्ट कहा था कि, "मैं नहीं चाहता कि केवल अंग्रेज देश से बाहर जाए, मेरी चाहत है कि अंग्रेजियत भी देश से बाहर जाए।"
- गांधीजी के आंदोलन की समग्र रणनीति को संघर्ष - विराम - संघर्ष की उपमा दी जाती है। संघर्ष के दौर में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रत्यक्ष आंदोलन चलाया जाता था जबकि विराम का दौर संघर्ष के दौर से भी अधिक चुनौतीपूर्ण था क्योंकि इस दौर में रचनात्मक कार्यक्रमों से जनता को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से जागरूक बनाकर उन्हें राष्ट्रीय संघर्ष में भागीदार बनाने का प्रयास किया जाता था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• इस तरह गांधीजी जनता के बीच सेतु बने रहे और प्रत्येक आंदोलन में जनसहभागिता पहले से बढ़ती चली गयी।

गांधी का नेतृत्वकर्ता के रूप में उभार

• परिस्थितियां :- (i) गांधी के भारत आगमन से पहले राष्ट्रवादी भावना तथा कांग्रेस के रूप में वृहद राष्ट्रीय मंच निर्मित हो चुका था अर्थात् गांधी को शून्य से आरंभ नहीं करना पड़ा।

(ii) दक्षिण अफ्रीकी प्रवास के दौरान गांधी ने भारतीयों के अधिकारों के लिए सत्याग्रह किया अर्थात् उनके राजनैतिक आदर्शों और प्रयोगों का सफल परीक्षण दक्षिण अफ्रीका में हो चुका था और 1915 में जब गांधी भारत वापस आए तो वैसी ही परिस्थितियां उन्हें यहां भी दिखायी दी।

(iii) गांधी के भारत आने से पहले ही उनकी सफल कृति भारत आ चुकी थी और जनता

KGS IAS

उनके नेतृत्व की आकांक्षा करने लगी और यह भी महत्वपूर्ण था कि प्रथम विश्वयुद्ध के दौर में राष्ट्रीय संघर्ष में नेतृत्वविहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

- व्यक्तित्व व रणनीति :- (i) 1915 में भारत वापसी के बाद गाँधी किसी दल से नहीं जुड़े और पहले दो वर्षों तक लगभग सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर भारतीयों की मनोदशा को समझा।

(ii) गांधी ने 1917-18 के चम्पारण, अहमदाबाद और खेड़ा के स्थानीय प्रयोगों से किसानों व श्रमिकों से अपने आप को जोड़ा और फिर 1919 में खिलाफत आंदोलन का समर्थन कर मुस्लिम वर्ग को भी राष्ट्रीय संघर्ष की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया।

(iii) गांधीजी ने अपनी वेशभूषा एक सामान्य भारतीय किसान की तरह धारण कर तथा अपने विचारों व गतिविधियों से आम जनता का वास्तविक प्रतिनिधि होने का

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

विश्वास जीता इसीलिए गाँधी का जनता से जुड़ा बौद्धिक मात्र न रहकर आत्मिक भी हो गया और लोग उन पर निरंतर विश्वास करते रहें।

(iv) नेतृत्वकर्त्ता की सफलता के लिए केवल यह जरूरी नहीं होता कि उसकी रणनीति क्या है, बल्कि यह भी जरूरी होता है कि लोग उसे किस नजर से देख रहे हैं।

(v) गाँधी की छवि का महात्मा के रूप में रूपांतरण भी महत्वपूर्ण रहा क्योंकि अब उनके साथ राष्ट्रीय संघर्षों में भाग लेना, सांस्कृतिक समारोह में भाग लेने जैसा हो गया।

(vi) संघर्ष - विराम - संघर्ष की रणनीति

- **विशेष** :-

विद्वानों का एक समूह गाँधी को लोकप्रिय बनाने में अफवाहों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है। एक ऐसे "कल्पनिक गाँधी" के

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

नेतृत्व की छवि बना दी गयी कि उन लोगों ने श्री गांधी के नेतृत्व में आस्था व्यक्त की जिन विषयों का समर्थन कभी श्री गांधी ने किया ही नहीं। जैसे कि असम में चाय उद्यान में कुलियों का विद्रोह

प्रश्नः- "व्यक्ति महान होता है या फिर परिस्थितियां उसे महान बनाती हैं।"

प्रश्नः- गांधीजी ने जनांदोलनों पर अंकुश लगाते हुए अपनी लोकप्रियता बनाए रखी।

गांधी के तीन स्थानीय प्रयोग

- चम्पारण सत्याग्रह (i) नील कृषकों के शोषण के विषय पर गांधी ने भारत में अपना पहला सफल सत्याग्रह चम्पारण में किया।

(ii) यहां तीनकठिया प्रणाली प्रचलित थी किन्तु रासायनिक रंग की खोज के बाद नील की मांग में कमी आने लगी किन्तु किसानों को

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

इसकी खेती से मुक्त करने के बदले हर्जाना माँगा जा रहा था जो निश्चित ही अन्यायपूर्ण व अनैतिक था। अतः स्थानीय किसान इसके विरोध में एकजुट होने लगे और राजकुमार शुक्ल ने गाँधी को नेतृत्व के लिए आमंत्रित किया।

(iii) इस विषय की जाँच के लिए चम्पारण समिति का गठन हुआ जिसमें गाँधी भी सदस्य बने तथा इसकी संस्तुति के आधार पर नील की खेती की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- अहमदाबाद आंदोलन :- (i) यहाँ मिल मालिकों और श्रमिकों के बीच प्लेग बोनस को लेकर विवाद बना हुआ था। प्लेग महामारी की समाप्ति के बाद मिल मालिक बोनस कम कर रहे थे किन्तु विश्वयुद्ध की परिस्थितियों में श्रमिकों का जीवन निर्वहन कठिन हो गया था अतः वे 50% बोनस

की माँग कर रहे थे जबकि मिल मालिक 20% पर सहमत थे।

(ii) श्रमिकों की हड़ताल से यहां तालाबंदी की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी जिससे सभी प्रभावित हो रहे थे। गाँधी ने भारत में पहली भूख हड़ताल इसी विषय पर की और अंततः 35% पर सहमत हुए।

- खेड़ा सत्याग्रह :- (i) यहां अकाल के कारण फसल बर्बाद हो गयी थी किन्तु प्रशासनिक अधिकारी लगान में छूट देने से इंकार कर रहे थे और कड़ाई से लगान वसूली का प्रयास कर रहे थे। गाँधी ने यहां लगानबंदी या नाफरमानी का नारा दिया और अंततः अंग्रेजों को परिस्थितियों के अनुसार किसानों की माँग माननी पड़ी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR